मनोज मानव

जन्मस्थान- अग्रवाल मंडी टटीरी, बागपत, उत्तर प्रदेश
शिक्षा- बी0 ए0 , सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा
प्रकाशन- स्वच्छता की राह पर (काव्य संकलन) , गीतिकामृत (गीतिका संकलन) आदि
सम्पादन- साहित्यिक सम्पादक दैनिक पब्लिक इमोशन , बिजनौर
सम्मान- इंडिया बुक्स ऑफ रिकॉर्ड 2023 में सम्मिलित , राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा " सुमित्रानन्दन पंत पुरस्कार- 2023-24" आदि
सम्प्रति- सहायक अभियंता, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, उत्तर प्रदेश

मैं दरिया हूँ धारा हो तुम।

कहीं गुरु के घर मे है राहू,
कहीं केतु शनि-घर है बैठा।
कोई दे रहा सुख किसी को,
कोई कष्ट लेकर है बैठा।
मेरा भाग्य जिससे लिखा है,
वही इक सितारा हो तुम।
मैं दरिया हूँ धारा हो तुम।

मैं पर्वत हूँ हरियाली तुम हो,
तुम्ही से मुझे मिलता है बल।
जहाँ साथ छोड़ा है तुमने,
वहाँ टूटता रहता पल-पल।
बचा जिससे अस्तित्व मेरा,
वही इक सहारा हो तुम।
मैं दरिया हूँ धारा हो तुम।

मदारी मैं जादू तुम्हीं हो,
तुम्हारे बिना मैं अधूरा।
मैं उपवन हूँ खुशबू तुम्ही हो।
तुम्हीं से मैं होता हूँ पूरा।
भले लोग मुझको सराहे,
सही में नजारा हो तुम।
मैं दरिया हूँ धारा हो तुम।

चुनावी सफर जिंदगी का,
नहीं पार्टियों की कमी है।
मगर परखा जिसको उसी की,
नजर सत्ता पर ही जमी है।
चला मैं रहा जिससे सत्ता,
वो सम्बल वो नारा हो तुम।
मैं दरिया हूँ धारा हो तुम।

हम प्रेमी, ये सूत्र गणित के

हम प्रेमी, ये सूत्र गणित के, हमें समझ कब आते हैं।
प्रेम-सूत्र हमको भाते जो , नैया पार लगाते है।

गणित सूत्र से एक-एक को
जोड़े तो दो पाते हैं।
सूत्र-मित्रता का लग जाये
तो ग्यारह कहलाते हैं।
लेकिन जुड़कर प्रेम-सूत्र में
मात्र एक हो जाते हैं।
हम प्रेमी, ये सूत्र गणित के
हमें समझ कब आते हैं।

कष्ट कर्ण की भाँति झुके हैं
बनकर हम आधार पड़े।
पकड़ छोर दोनों के वे जब
हो जाते बन लम्ब खड़े।
पाइथागोरस प्रमेय को हम
सिद्ध तभी कर पाते हैं।
हम प्रेमी, ये सूत्र गणित के
हमें समझ कब आते हैं।

लाभ- हानि के साथ ब्याज की
बात नहीं हमको भाती।
बीजगणित सँग कैलकुलस तो
बिल्कुल समझ नहीं आती।
प्रेम-विषय के छंद-गीत पर
हम कंठस्थ सुनाते हैं।
हम प्रेमी, ये सूत्र गणित के
हमें समझ कब आते हैं।

ISSN:2583-8849